

अंक्य वि. (तत्.) 1. जिसका अंकन संभव हो 2. जो चिह्नित लिए जाने योग्य हो 3. दागने योग्य पुं. गोद में रखकर बजाए जाने योग्य कोई वाद्ययंत्र जैसे- सितार, वीणा, ढोलक आदि।

अंखड़ी स्त्री. (तद्.) आंख, नेत्र।

अंखिया स्त्री. (तद्.) 1. हथौड़ी से ठोक ठोक कर नक्की करने की कलम या ठप्पा 2. आँख।

अंखुआ पुं. (तत्. अंकुर) 1. बीज से फूटकर निकला हुआ कोमल नोकदार अंश जिसमें से पहली पत्तियाँ निकलती हैं 2. बीज से पहले-पहल निकली हुई मुलायम बंधी पत्ती, डाभ, कल्ला, कोपल 3. उभार, उठान।

अंखुआना अ.क्रि. (तद्.) 1. अंकुर फूटना, उगना या जमना 2. उभड़ना, उठना।

अंग क्रिया स्त्री. (देश.) संस्कृत अंग कर्म का स्त्रीलिंग।

अंग पुं. (तत्.) 1. शरीर का कोई भी अवयव 2. भाग, हिस्सा 3. तन, शरीर मुहा. अंग टूटना-श्रम के कारण शरीर के अंगों में पीड़ा होना, अंग तोड़ना- कसरत करना; अंग फड़कना- शरीर के किसी अंग में रह-रहकर थोड़ी देर तक कंपन या स्फुरण होना; अंग लगाना- गले लगाना।

अंगक पुं. (तत्.) चिकि. कोशिकाद्रव्य psytoplasm जिसमें केंद्रक के अतिरिक्त विशेष प्रकार की वे जैवी संरचनाएँ, जिनकी कोशिका के अंतर्गत होने वाली क्रियाओं में सहभागिता होती है 2. जीव. कोई विशिष्ट प्रकार्य करने वाला कोशिका का सुस्पष्ट अंग जैसे- केंद्रक, लवक आदि।

अंगकर्म पुं. [अंग-कर्म] (तत्.) शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए बाह्य रूप से उबटन, तेल आदि का मलना।

अंगघात पुं. (तत्.) शा.अर्थ अंग पर आघात विशेष, पक्षाघात या लकवे की स्थिति, शरीर में संवेदन और क्रियाशीलता का अभाव।

अंगचारी पुं. (तत्.) साथ में रहने वाला, सखा, सहयोगी, सहचारी, मित्र।

अंगचालन पुं. (तत्.) अंगों को चलाना, अंगों को हिलाना-डुलाना।

अंगच्छेद पुं. (तत्.) अंगों को काटने की क्रिया, भाव, शरीर के किसी अंग को काटकर निकाल देने की क्रिया। amputation

अंगच्छेदन पुं. (तत्.) शरीर के अंगों को काटने की क्रिया।

अंगज पुं. (तत्.) 1. अंग से उत्पन्न, जैसे- पसीना, रोग, बाल, रक्त, खून 2. पुत्र 3. काम-क्रोधादि मानसिक विकार 4. कामदेव 5. नायिका के सात्विक अलंकारों का एक भेद हाव, भाव, हेला, का समूह।

अंगज अलंकार पुं. (तत्.) काव्य नायिका के सात्विक अलंकारों के तीन भेदों में से एक, हाव, भाव, हेला का समूह।

अंगजा वि. (तत्.) जो शरीर से उत्पन्न हुई हो, पुत्री, बेटी।

अंगजात पुं. (तत्.) अंगज, अंगजा का पर्यायवाची या समानार्थी।

अंगड़-खंगड़ देश. 1. टूटा-फूटा 2. निरर्थक सामान 3. बिखरा या व्यर्थ सामान 4. बचा-खुचा सामान।

अंगतंत्र पुं. (तत्.) प्राणि.वि. शरीर में परस्पर सहयोग से किसी विशेष सामूहिक कार्य को करने के लिए अनेक अंगों का मिला कर बना हुआ तंत्र जैसे- पाचन-तंत्र।